Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 GISRRJ | Volume 2 | Issue 2 | ISSN : 2582-0095

कुमारसंभवम् महाकाव्य में पर्यावरण: एक विमर्श

नीतू सिंह

शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग,

स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर, उ0प्र0

शोध आलेख सार – कालिदास ने पर्यावरण का आलम्बन और उद्दीपन दोनों रूपों में वर्णन किया है। कुमारसम्भवम् के प्रथम सर्ग में हिमालय के सौन्दर्य का वर्णन आलम्बन रूप में किया है। हिमालय का वर्णन पाठक के मानस पठल पर हिमलालय की सुन्दरता का स्पश्ट चित्र खींचने में पूर्णतया समर्थ है।

मुख्य शब्द – स्वाभाविक, मनोरम, कुमारसम्भवम्, पर्यावरण, साहित्य।

महाकवि कालिदास का स्वाभाविक और मनोरम चित्रण कु ालतापूर्वक करने में सि़द्धस्त है। कालिदास के प्रकृति चित्रण से ज्ञात होता है कि मानो कालिदास ने स्वयं प्रकृति का सूक्ष्म दृश्टि से अवलोकन कर वर्णन किया, जिससे सजीव चित्रण सम्भव हो सके। कालिदास ने प्रकृति का मानवीकरण भी किया है। मानव की सहचरी प्रकृति उनके दुःख में दुःखी होती है और सुख से सुखी होती है, यह कालिदास की वि ाश्टता है। कुमारसम्भवम् में कालिदास की प्रकृति आध्यात्मिकता से ओत–प्रोत है।

कालिदास ने पर्यावरण का आलम्बन और उद्दीपन दोनों रूपों में वर्णन किया है। कुमारसम्भवम् के प्रथम सर्ग में हिमालय के सौन्दर्य का वर्णन आलम्बन रूप में किया है। हिमालय का वर्णन पाठक के मानस पठल पर हिमलालय की सुन्दरता का स्पश्ट चित्र खींचने में पूर्णतया समर्थ है।

हिमालय भारत का गर्व मुकुट है। कालिदास ने हिमालय को पूर्व से प ाचम समुद्र तक विस्तृत पृथ्वी के मानदण्ड की संज्ञा दी है।

अत्स्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा, हिमालयो नाम नगाधिराजः।
पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य, स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः।।[1]

गौरिक सिन्दूर आदि के प्रतिबिम्ब से पर्वत ि ाखर पर मडराने वाले बादलों से संध्या का दृ य उपस्थित होता है। यह वर्णन कालिदास के हिमालय के सूक्ष्म प्रकृति अवलोकर के प चात् वर्णन का प्रमाणा है।

य चाप्सरोवभ्रममण्डनानां सम्पादयित्रीं ि ाखरैर्बिभर्ति।
बलाहकच्छेदविभक्तरागामकालसन्ध्यामिव धातुमत्ताम्।।[2]

हिमालय के उच्च ि ाखर तथा उस पर निवास करने वाले सिद्ध महात्माओं का भी सुन्दर चित्रण किया है। बादल हिमालय के उँचे ि ाखरों तक नहीं पहुँच पाते।[3] प्रथम सर्ग में हिमालय की बर्फ, हिमालय पर रहने वाले गज और सिंह, किन्नरियों का वर्णन, उनकी मन्थर गति का मनोरम एवं स्वाभाविक वर्णन हुआ है। हिमालय पर्वत पर घूमने

वाले बादलों का भी सजीव वर्णन कवि करते हुए किन्नरियों के गुफा रूपी द्वार पर पर्दे का काम करने वाले प्रदर्शित किया है।[4]

प्रकृति के सहज सौन्दर्य, मानवीय राग, कोमल भावनाओं तथा कल्पना के नवनवोन्मेष का जो रूप कुमारसम्भवम् के अष्टम सर्ग में मिलता है, वह भारतीय साहित्य का शिखर कहा जा सकता है। कवि ने सन्ध्या और रात्रि का वर्णन हिमालय के पावन प्रदेश में शिखर के गरिमामय वचनों के द्वारा पार्वती को सम्बोधित करते हुए कराया है, और प्रसंग, देशकाल के अनुरूप प्रकृति का इतना उदात्त और कमनीय वर्णन विश्व साहित्य में दुर्लभ कहा जा सकता है। पश्चिम में डूबते सूर्य की रश्मियाँ सरोवर के जल में लम्बी–लम्बी होकर प्रतिबिम्बित हो रही हैं, तो लगता है कि अपनी सुदीर्घ परछाइयों के द्वारा विवस्वान् भगवान ने जल में सोने के सेतुबन्ध रच डाले हों।[5] वृक्ष के शिखर पर बैठा मयूर ढलते सूर्य के घटते चले जाते सोने के जैसे गौरमण्डलयुक्त आतप को बैठा पी रहा हो।[6] पूर्व में अंधेरा बढ़ रहा है, आकाश के सरोवर से सूर्य ने जैसे आतप रूपी जल को सोख लिया, तो इस सरोवर के एक कोने में जैसे कीचड़ ऊपर आ गया हो।[7]

सूर्य के किरणों का जाल समेट लिया है, तो हिमालय के निर्झरो पर अंकित इन्द्रधनुष धीरे–धीरे मिटते जा रहे हैं।[8] कमल का कोश बन्द हो रहा है, पर भीतर प्रवेश करते भ्रमर को स्थान देने के लिए कमल जैसे मुंदते–मुंदते ठहर गया है।[9] अस्त होते सूर्य की किरणें बादलों पर पड़ रही हैं, उनकी नोंके रक्त, पीत और कपिश हो गयी हैं, जैसे सन्ध्या ने पार्वती को दिखाने के लिये तूलिका उठा कर उन पर रंग–बिरंगी छवियाँ उकेर दी हों। कुमारसम्भवम् में चन्द्रमा की किरणों के लिये जौ के ताजा अंकुर का उपमान देकर उन्होंने मानो स्वर्ग को धरती से मिला दिया है–

शक्यमोषधिपतेर्नवोदयाः कर्णपूरचनाकृते तव।
अप्रगल्भयवसूचिकोमलाश्छेत्तुमग्रनखसम्पुटैः करा।।[10]

कुमारसम्भवम् महाकाव्य के उमासुरतवर्णन नामक अष्टम सर्ग में कवि ने उमा को चन्द्रमा और प्रकृति के साथ तादात्म्य दिखलाते हुए वर्णन किया है–

रक्तभावमपहाय चन्द्रमा जात एष परिशुद्धमण्डलः
विक्रया न खलु कालदोषजा निर्मलप्रकृतिक स्थिरोदया।[11]

आगे भी कवि ने उमा के सौन्दर्य का वर्णन प्रकृति से जोड़कर करते हुए कहा है–

चन्द्रपाजनितप्रवृत्तिभिश्चन्द्रकानतजलबिन्दुभिर्गिरः।
मेखलातरुषु निद्रितानमून्बोधयत्यसमये शिखण्डिनः।।[12]

व

कल्पवृक्षशिखरेषु सम्प्रति प्रस्फुरदिभरिव पश्य सुन्दरि।
हारयष्टिरचनामिवांशुभिः कर्त्तुमद्यतकुतूहलः शशी।।[13]

कहीं पर शिव को वृक्षों की टहनियों से बिछल (फिसल) कर छन–छन कर धरती पर गिरती चाँदनी के थक्के वृक्षों से टपक पड़े फूलों से लगते हैं, जिन्हें उठा–उठा कर पार्वती के केशों में सजाने का काम होता है–

शक्यमङ्गुलिभिरूत्थितैरधः शाखिना पतितपुष्पपेशलैः।

पत्रजर्जरशशिप्रभालवैरेभिरूत्कचयितुं तवालकान्।।[14]

प्रकृति में मानवीय राग, करुणा और हृदय की कोमलता के दर्शन कालिदास अपनी विश्वदृष्टि के द्वारा ही कर सके हैं। अँधेरा रमणी का जुड़ा है, जिसे चन्द्रमा अपने करों से बिखेर देता है और फिर उस रमणी के सरोज लोचन वाले मुख को उठा कर वह चूम लेता है–

अङ्गुलीभिरिव केशसंचयं सन्निगृह्य तिमिरं मरीचिभिः।

कुडमलीकृतसरोजलोचन चुम्बतीव रजनीमुखं शशी।।[15]

उत्प्रेक्षा और स्वभावोक्ति उत्कृष्ट संसृष्टि कवि ने इस प्रकार के प्रकृति–चित्रणों में की है। उक्त पद्य में 'कुडमलीकृतसरोजलोचनं' कामिनी का लज्जा से नेत्र मूंदने का चित्र होने से वल्लभदेव के अनुसार स्वभावोक्ति है, जबकि 'जुम्बतीव' में समासोक्ति तथा उत्प्रेक्षा दोनों अलंकार आ गये हैं।

महाकवि कालिदास ने यद्यपि प्रायः प्रकृति के कोमल रूप का चित्रण किया है, किन्तु कुमारसम्भवम् के वर्षा चित्रण में भयावहता दर्शनीय है–

घोरान्धकारनिकरप्रतिमो युगांत–

कालानलप्रबलधूमनिभो नभोसन्ते।

गर्जारवैर्विघटयचन्नवनीधराणां

शृङ्गाणि मेघनिवहो घनमुज्जगाम।।[16]

कार्तिकेय के वारुणास्त्र चलाते ही भंयकर अंधेरा करती हूई प्रलय की आग के उठे हुए धुँए के समान ऐसी काली–काली घटायें आकाश में छा गयीं जिनके गर्जन से पहाड़ की जोटियों तक दरारें पड़ गयीं।

पर्यावरण, वातावरण या प्रकृति, ये शब्द अर्थ की दृष्टि से काफी कुछ मिलते–जुलते हैं। भारतीय मनीषा में पंच महाभूत तथाा अष्टप्रकृति के नाम से जिन मुख्य तत्वों को माना गया है, उन्हें हम आज भी–आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, सूर्य और चन्द्रमा आदि के रूप में देख सकते हैं। पर्यावरण शुद्धि और संतुलन की दृष्टि से यज्ञ का महत्व आज वैज्ञानिकों ने भी मान लिया है, अतः उपर्युक्त तत्वों में यज्ञकर्ता को भी आठवें क्रम पर स्वीकार किया गया था। ऋषियों ने आध्यात्मिक पर्यावरण को भी भौगोलिक व खगोलिक पर्यावरण के अभिन्न हिस्से के रूप में माना। वैदिक शान्ति पाठ में भी हम इन्हीं प्राकृतिक शक्तियों की शान्ति और समन्वय की प्रार्थना अथवा कामना अनादिकाल से करते आए हैं। यह स्वाभाविक ही है कि इसी वैदिक पृष्ठभूमि पर भारतीय संस्कृति के अमर गायक के रूप में अवतरित होने के कारण महाकवि कालिदास आदि ने भी बड़े रोचक, प्रभावों तथा व्यावहारिक ढंग से पर्यावरण के प्रति संवेदना तथा सजगता की बातें बताईं।

देवाधिदेव महादेव शंकर, प्रदूषण रूपी कालकूट विष को पीने के कारण ही महामृत्युंजय कहलाए। अब समुद्रमन्थन को पृथक मानने की मान्यता को वैज्ञानिक भी ध्वस्त कर चुके हैं। वे समस्त वन्य पशु आदि के स्वामी होने से पशुपति कहलाते हे। वस्तुतः तो वे प्राणिमात्र के प्राणनाथ अतः भूतनाथ और विश्वनाथ माने गये है। ये नाम बड़े सार्थक है। प्रकृति प्रेमियों को इन पर इस दृष्टि से भी चिन्तन और मननकरना चाहिए। वे कालिदास के आराध्य भी हैं। प्रायः हर ग्रन्थ के शुभांरभ के मंगल श्लोंको में कवि ने उन्हें एक व्यापक पर्यावरणीय देव के रूप में स्मरण

किया। मध्यप्रदेश के भिण्ड क्षेत्र से पाँचवी सदी की एक मूर्ति मिली है, जिसमें सीता अशोक वृक्ष के नीचे शोकाकुल बैठी हुयी है। कुषाण कालीन मूर्तियों में भी वृक्ष दिखलाये गये है। सॉची के स्तूप (150ई0पू) में भी आम्र प्रतिमाएँ चित्रित हुई (150 ई0पू0) में भी आम्र प्रतिमाएँ चित्रित हुई है। मूर्तिकला के भी पर्यावरण चेतन होने के संकेतक है।

महाकवि कालिदास ने यद्यपि अपने उक्त ग्रन्थ में प्राकृतिक सौन्दर्य का ही वर्णन किया है, किन्तु पर्यावरण सम्बन्धी जो मार्मिक चित्रण इन्होनें उपर्युक्त दृष्टि से की है, उससे प्रत्येक मनुष्य को प्राकृतिक चेतना की प्रेरणा अवश्य मिलती है, अतः पर्यावरण की दृष्टि से कालिदास का यह ग्रन्थ अत्यन्त ही लाभ प्रद व अनुकरणीय है।

सन्दर्भ सूची

1. कुमारसंभवम् 1/1
2. कुमारसंभवम् 1/4
3. आमेखलं संचरतां धनानां छायामधः सनुगतां निशेव्य।
   उद्धेजिता वृश्टिभिराश्रयन्ते श्रृंगाणि यस्यातपवन्ति सिद्धाः।।कुमारसंभवम् 1/5
4. पदं तुशारस्रुतिधौतरक्तं यस्मिन्नदृश्ट्वापि हतद्विपानाम्।
   विदन्ति मार्गं नखरन्ध्रमुक्तैर्मुक्ताफलैः केसरिणां किराताः।। कुमारसंभवम् 1/6
   न्यस्ताक्षरा धातुरसेन यत्र भूर्जत्वचः कुंजरबिन्दु ोणाः।
   व्रजन्ति विद्याधरसुन्दरीणाम् अनंग लेखक्रिययोपयोगम्।। कुमारसंभवम् 1/7
   यः पूरयन् कीचकरन्ध्रभागान् दरीमुखोत्थेन समीरणेन।
   उद्गाास्यतामिच्छति किन्नराणां तानप्रदायित्वमिवोपगन्तुम्।। कुमारसंभवम् 1/8
   कपोलकण्डूः करिभिर्विनेतुं विघट्टितानां सरलद्रमाणाम्।
   यत्र स्रुतक्षीरतया प्रसूतः सानूनि गन्धः सुरभीकरोति।। कुमारसंभवम् 1/9
   वनेचराणां वनितासखानां.....मतैलपूराःसुरतप्रदीपाः।। कुमारसंभवम् 1/10
   उद्धेजयत्यंगुलिपार्श्णिभागान्.....भिन्दन्ति मन्दां गतिम वमुख्यः।। कुमारसंभवम् 1/11
   दिवाकराद्रक्षति यो गुहासु .....ममत्वमुच्चैः ि ारसां सतीव।। कुमारसंभवम् 1/12
   लांगुलविक्षेपविसर्पि ोभैः.....कुर्वन्ति बालव्यसनै चमर्यः।। कुमारसंभवम् 1/13
   यत्रां ुकाक्षेपविलज्जितानां .....स्तिरस्करिण्यो जलदा भवन्ति।। कुमारसंभवम् 1/14
   भागीरथीनिर्झर ीकराणां.....रासेव्यते भिन्नि ाखण्डिबर्हः।। कुमारसंभवम् 1/15
5. पश्य पश्चिमदिगन्त लम्बिना निर्मितं मितकथे विवस्ता।
   दीर्घया प्रतिमया सरोम्भसां तापनीयमिव सेतुबन्धनम्।।(कुमारसंभवम् 8.34)
6. एष वृक्षशिखरे कृतास्पदो जातरूपरसगौरमण्डलः।
   हीयमानमहरत्ययातपं पीवरोरू पिबतीव बर्हिणः।। **(कुमारसंभवम् 8.36)**
7. पूर्वभागतिमिर प्रवृत्तिभिर्व्यक्तपंकमिव जातमेकतः।
   खंतातपजलं विवस्वता भाति किंचियदिव शेषवत्सरः।। **(कुमारसंभवम् 8/37)**
8. आविशद्भिरूटजा[3]णं मृगैर्मूलसेकसरसैचवृक्षकैः..... **(कुमारसंभवम 8/38)**
9. बद्धकोशमपि तिष्ठति क्षणं सावशेषविवंर कुशेशयम..... **(कुमारसंभवम 8/39**

10. कु.सं.8.62
11. कु.सं.8.65
12. कु.सं.8.67
13. कु.सं.8.68
14. कु.सं.8.72
15. कु.सं.8.63
16. कु.सं.17.4
17. कु.सं.1.1

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कुमारसंभवम्—व्या0 डॉ. रामचन्द्र वर्माशास्त्री
(नवीन शाहदरा दिल्ली—2000)
2. कुमारसंभवम्— टीकाकार डॉ. रामचन्द्र वर्मा शास्त्री (मनोज पब्लिकेशन नई दिल्ली—1984)
3. कुमारसंभवम्—कपिलदेव भाषा—द्विवेदी
4. कुमारसंभवम्—भाषा भाष्यकार श्री पं0 प्रद्युम्नपाण्डेयः